eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर के चिंतन की आधुनिक समय में प्रसंगानुकुलता

[1]डॉ सीताराम आठिया
[1]स्वास्थ्य पर्यवेक्षक, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र देवरी जिला सागर, म0प्र0

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

कबीरदास जी हिंदी के महान कवियों में से एक हैं। उत्तर भारत में तुलसीदास जी के बाद यदि किसी अन्य कवि का काव्य लोगों की जबान पर है, तो वह कबीर ही है। कबीर की साखिया उनके पद लोगों को कंठस्थ याद हैं, जिन्हें वे अनेक अवसरों पर उदाहरण स्वरुप प्रस्तुत करते हैं। कबीर को जो लोकप्रियता प्राप्त हुई उसका मूल कारण यह है कि उनके काव्य में अनुभूति की सच्चाई और अभिव्यक्ति का खरापन है। उन्हें जो अच्छा लगा उसका खुलकर समर्थन किया और जो बुरा लगा, निर्भीकता– पूर्वक उसका विरोध किया। उनका यह खरा स्वभाव लोगों को पसंद आया और इसीलिए वह जनता के कंठहार बन गए।

मुख्य शब्द– अंधविश्वास, कुरीतियां, चिंतन, समाज सुधारक

Introduction

कबीरदास का जन्म ऐसे समय में हुआ, जब समाज अनेक बुराइयों से ग्रस्त था। छुआछूत, अन्धविश्वास, रूढ़िवादिता का बोलबाला था, हिन्दू–मुस्लिम आपस में दंगा–फसाद करते रहते थे। धार्मिक पाखण्ड अपनी चरमसीमा पर था। कबीर ने इन सबका डटकर विरोध किया और सभी क्षेत्रों में फैली हुई सामाजिक बुराइयों को दूर करने का भरपूर प्रयास किया। उन्होंने अपनी बात निर्भीकता से कही तथा हिन्दुओ और मुसलमानो को डटकर फटकारा। वस्तुतः कबीर भक्त और कवि बाद में थे. वे सही अर्थों में समाज सुधारक पहले थे। कबीर की शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक हैं।

कबीर दास ने अपना संपूर्ण जीवन मानव मूल्यों की रक्षा करने एवं मनुष्यों की सेवा करने में व्यतीत कर दिया था। माना जाता है कि कबीर दास भारतीय इतिहास के एक महान एवं प्रसिद्ध कवि हैं, जिन्होंने समाज में भक्ति के भाव को उजागर किया था। उन्होंने अपने जीवन काल में कई प्रकार की अद्भुत रचनाएं की थी जिनके कारण उन्हें कवियों की श्रेणी में सर्वोत्तम माना जाता है।

कबीरदास की साहित्यिक कृतियां– कबीरदास जी के अनुसार वह पढ़े–लिखे नही थे।

अपनी विचारों को वह कविता के रूप में व्यक्त करने में कुशल थे। उनकी कविताओं का संग्रह एवं संकलन बाद में उनके भक्तों ने किया। उनकी रचनाओं का संकलन बीजक नाम से किया गया है, जिसके तीन भाग है–

1. साखी – यह दोहा तथा छन्द् में लिखी गई है तथा इसकी विषयवस्तु कबीर की शिक्षाओं एवं सिद्धान्तों का विवेचन रहा है।

©IJARMS JOURNAL, 2024
WWW.IJARMS.ORG

2. सबद – कबीरदास के पदो को श्सबदश कहा जाता है। ये पद गेय हैं, तथा इनमें संगीतात्मकता विद्यमान है। रहस्यवादी भावना एवं अलीकिक प्रेम की अभिव्यक्ति इन पदों में हुई है।

3. रमैनी – रमैनी की रचना चौपाइयों में हुई है। कबीर के रहस्यवादी एवं दार्शनिक विचारों की अभिव्यक्ति इसमें हुई है।

तत्कालीन परिस्थितियों में कबीर की प्रासंगिकता–

कबीर दास जी एक संत के साथ साथ एक विचारक और समाज सुधारक भी थे। वे हिंदी साहित्य के ऐसे कवि थे, जिन्होंने समाज में फैली भ्रांतियों, रूढ़ियों , अंधविश्वासों, अज्ञानता, धार्मिक , जातीय भेदभाव, हिंसा और बुराइयों पर अपनी लेखनी के जरिए कुठाराघात किया है। उन्होंने अपने दोहों एवम साखियों के माध्यम से तत्कालीन समाज को जीवन जीने की कई सीखें दी हैं। संत कबीर दास जी के दोहों ने लोगों पर व्यापक प्रभाव डाला है। उनके दोहे आज भी मनुष्य को जीवन जीने की सही राह दिखाते हैं।

संत कबीर के कुछ ऐसे ही अनमोल दोहे है...
माला फेरत जग मुवा, फिरा न मन का फेर।
कर का मन का डार के, मन का मन का फेर।।

अर्थात कोई व्यक्ति लंबे समय तक हाथ में मोती की माला लेकर तो घुमाता है, पर उसके मन का भाव नहीं बदलता, उसके मन की हलचल शांत नहीं होती। कबीर ऐसे व्यक्तियो को सलाह देते है कि हाथ की इस माला को फेरना छोड़ कर मन के मोतियों को बदलो या फेरो।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।

अर्थात बड़ी–बड़ी किताबें पढ़ कर संसार में कितने लोग मृत्यु के द्वार पहुंच गए, लेकिन सभी विद्वान ना हो सके। कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले, अर्थात प्यार का वास्तविक रूप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।

गुरु गोविंद दोउ खड़े, काके लागू पांय।
बलिहारी गुरु आपनो, गोविन्द दियो बताय।

अर्थात गुरु और भगवान दोनों एक साथ खड़े हैं, पहले किसके चरण–स्पर्श करें। कबीरदास जी कहते हैं, पहले गुरु को प्रणाम करूंगा, क्योंकि उन्होंने ही गोविंद तक पहुंचने का मार्ग बताया है।

तन को जोगी सब करें, मन को बिरला कोई।
सब सिद्धि सहजे पाइए, जे मन जोगी होइ।

अर्थात शरीर में भगवे वस्त्र धारण करना सरल है, पर मन को योगी बनाना बिरले ही व्यक्तियों का काम है। यदि मन योगी हो जाए तो सारी सिद्धियां सहज ही प्राप्त हो जाती हैं।

जब मैं था तब हरी नहीं, अब हरी है मैं नाही।
सब अँधियारा मिट गया, दीपक देखा माही

अर्थात जब मैं अपने अहंकार में डूबा था, तब प्रभु को न देख पाता था। लेकिन जब गुरु ने ज्ञान का दीपक मेरे भीतर प्रकाशित किया तब अज्ञान का सब अंधकार मिट गया। ज्ञान की ज्योति से अहंकार जाता रहा और ज्ञान के आलोक में प्रभु को पाया।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंछी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।

अर्थात खजूर के पेड़ के समान बड़ा होने का क्या लाभ, जो ना ठीक से किसी को छाँव दे पाता है और न ही उसके फल सुलभ होते हैं।

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान ।।

अर्थात सज्जन की जाति न पूछ कर उसके ज्ञान को समझना चाहिए। तलवार का मूल्य होता है न कि उसको ढकने बाली म्यान का।

जीवन में मरना भला, जो मरि जानै कोय ।
मरना पहिले जो मरै, अजय अमर सो होय ।।

अर्थात जीते जी ही मरना अच्छा है, यदि कोई मरना जाने तो। मरने के पहले ही जो मर लेता है, वह अजर– अमर हो जाता है। शरीर रहते–रहते जिसके समस्त अहंकार समाप्त हो गए, वे विजयी ही जीवन मुक्त होते हैं।

तत्कालीन समाज में जाति प्रथा का दंश हिन्दू समाज में व्याप्त था। कबीर के समय में भी यह अपने विकराल रूप में था। उन्होंने समाज के इस भयानक रूप को देखा जिससे मानवता त्रस्त थी और फिर बेबाकी से इसका विरोध किया। उन्होंने ऊँच–नीच की भावना पर प्रहार करते हुए कहा–

पछा पछी के कारनै सब जग रहा भुलान।
निरपछ होय कै हरि भजे, सोई संत सुजान।।
ऊंचे कुल का जनमिया, करनी ऊंच न होय।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधु निंदत सोय।।

कबीर जी ने तत्कालीन समय में अपनी साखियों में जो शिक्षाएँ दी हैं, वह आज भी प्रासंगिक है।

कबीर की दो साखियों ने समाज को व्यापक रूप से प्रभावित किया था, जो निम्नलिखित हैरू

1, बुरा जो देखन मैं चला
2 मन के हारे हार हैं, मन के जीते जीत।

©IJARMS JOURNAL, 2024

बुरा जो देखन मैं चलाष साखी ने मुझे बुराई की पहचान कराई है और उसे दूर करने की अहमियत बताई है। यह मुझे यह सिखाती है कि बुरे कार्यों या दृष्टिकोणों को देखने के बजाय, मैं अपने अंदर बदलाव लाने के लिए जिम्मेदार हूँ। यह साखी मेरे लिए सत्य की एक महत्वपूर्ण सीख है।

दूसरी साखी मन के हारे हार हैं, मन के जीते जीत मुझे मन की महत्वपूर्णता के बारे में समझाती है। इस साखी ने मेरे मन को सशक्त और सकारात्मक बनाने की प्रेरणा दी है। यह मुझे यह बताती है कि सच्ची जीत मन के आंतरिक शांति, आनंद और संतोष में होती है, और मन की हार उसके अस्थायी इच्छाओं और संकटों में होती है। इस साखी ने मुझे स्वयं को संयमित करने और सकारात्मक आदर्शों के साथ जीने की प्रेरणा दी है।

आधुनिक समय में कबीर की प्रासंगिकतारू कबीरदास जी का जन्म भले ही आज से 600 वर्ष पूर्व हुआ हो, किन्तु उनकी शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक है। बल्कि यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि आज उनकी शिक्षाओं की आवश्यकता तत्कालीन युग की अपेक्षा कहीं अधिक है। हिन्दू मुस्लिम, मंदिर मस्जिद के प्रश्न पर उस समय भी आपस में संघर्षरत थे, और आज भी है। धर्म के ठेकेदार धार्मिक उन्माद के चूल्हे पर स्वार्थ की रोटियाँ सेंकते थे, वैसा ही वर्तमान समय में हो रहा है। वोटों की कलुषित राजनीति ने इसे और भी गंदा कर दिया है। कबीर ने सर्व धर्म समभाव का सन्देश देकर हिन्दु और मुस्लिमो के उन दोषों को पूरी निर्भीकता से उजागर किया, जिन आधार पर वह एक दूसरे के शत्रु बने हुए थे। हिन्दू मुस्लिम समस्या आज भी यथावत बनी हुई है, इसीलिए कबीर आज भी प्रासंगिक हैं। कबीरदास ने किसी विशेष सम्प्रदाय या पूजा पद्धति का प्रचार नहीं किया। इसीलिए उन्होंने परमेश्वर के लिए राम, कृष्ण, केशव, करीम, अल्लाह, खुदा रहमान, गोबिंद, माधव आदि सभी प्रचलित नामों को ग्रहण किया और शुद्धाचरण तथा निर्भीकता पर आधारित भक्ति का सन्देश दिया।

वर्तमान समाज में जातिवाद तथा धार्मिक विद्वेष जैसी समस्याओं के समाधान में कबीर की शिक्षाएँ अधिक प्रभावी भूमिका का निर्वाह कर सकती है। नैतिक मूल्यों का क्षरण तथा मानवीय मूल्यों के विघटन के विषाक्त प्रभाव को कम करने के लिए कबीर की अमृतवाणी की आवश्यकता आज भी प्रासंगिक है। समाज में पाखण्ड और दुराचरण की घटनाएं पूर्व की अपेक्षा बढ़ी है। छल कपट, हिंसा, अज्ञान और विद्वेष ने समाज को खोखला कर दिया है। अतः कबीर की प्रासंगिकता वर्तमान सन्दर्भों में और भी बढ़ गयी है, उन्होंने पाखण्ड, अन्धविश्वास एवं रूढ़ियों पर कुठाराघात किया था। उंच नीच के भेद को समाज का कोढ़ बताते हुए उन लोगों को आड़े हाथों लिया, जो ऊँच नीच के भेद की दीवारें खड़ी करके अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे थे।

कबीरदास जी का साहित्य में स्थान संत कबीर दास जी अपने युग के एक महान कवि, समाज सुधारक और प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदू और मुस्लिमो की धार्मिक कुरीतियों एवं रूढ़िगत विश्वासों का विरोध किया था। उनकी रचनाओं ने हिंदी साहित्य के भक्ति आंदोलन को बृहद रूप में प्रभावित किया था। संत कबीरदास बाल्यावस्था से निरक्षर थे, परंतु उनके पास परमज्ञान था। वह ईश्वर में पूर्ण विश्वास एवं आस्था रखते थे। उनका मानना था कि

ईश्वर कण–कण में विद्यमान होते हैं, जिसके कारण वे मूर्ति पूजन का खंडन किया करते थे। उन्होंने धार्मिक एकता, राष्ट्रीयता एवं समाज सुधार हेतु अनेक उपदेश दिए थे जिसके कारण उनके अनुयायी उन्हें महात्मा के नाम से भी पुकारा करते थे।

अध्ययन का उद्देश्य कबीर एक विचारशील संत रहे है, उनके विचार आधुनिक युग के लिए काफी महत्वपूर्ण हैं। सच को देखकर उसे अनुभव कर पाना कबीर की विचारशीलता को प्रमाणित करता है। अतः कबीर के विचारो को समाज में संप्रेषित कर सामाजिक बुराइयों को खत्म कर सामाजिक एकता स्थापित करना इस लेख का मुख्य उद्देश्य है।

निष्कर्ष आधुनिक युग में कबीरदास जी की प्रासंगिकता उनके जीवन–दर्शन एवं उनकी रचनाओं के सम्यक् विवेचन से ज्ञात होती हैं। समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों पर कबीरदास जी ने इतने तीखें प्रहार किये कि ढ़ोगी बाबाओं, ब्राह्मणों, मौलवियों जिन्होंने समाज में अंधविश्वास के माध्यम से अपना दबदबा बना रखा था, उनके दिखावों की धज्जियाँ उड़ गयी। उनकी वाणी में तीखा एवं अनोखा व्यंग्य देखने को मिलता था, जो कि बौद्धिकता की कसौटी पर खरा उतरता है। कबीर की पावन वाणी आज के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उतनी ही प्रासंगिक, तेजमय तथा उपयोगी सिद्ध होती है, जितनी उस समय थी।

संदर्भ सूची–

1, डॉ श्याम सुंदरदास, कबीर ग्रंथावली

2, गुंजन कुमारी, वर्तमान संदर्भ में कबीर के व्यंग की प्रासंगिकता

3, प्रोफेसर वीरेंद्र कुमार, प्राध्यापक, हिंदी, हिसार हरियाणा, कबीर कल आज और कल

4, हरिओम, कबीर के काव्य की प्रासंगिकता

5, ई ज्ञान कोष, कबीर की विचार चेतना और प्रासंगिकता

6, बीनू भटनागर, कबीर की प्रासंगिकता

7, जयंत कुमार बोरो, सहायक प्राध्यापक, कोकराझार असम, कबीर दास की वर्तमान समय में प्रासंगिकता की समीक्षा